तानी समुदाय की कृषि-संबंधी लोक कथाओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-दर्शन

यागे काबाक

प्रत्येक समाज का अपना जीवन-दर्शन होता है, जिसके आधार पर इनका लोक-जीवन संचालित और अनुप्रेरित होता है। पूर्वोत्तर के राज्यों में अरुणाचल प्रदेश का आदिवासी जीवन-दर्शन दृष्टांतपरक है। यहाँ के रहवासी तानी समुदाय अपने लोक-जीवन में विशिष्ट जीवन-दर्शन को आज भी पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ अपनाए हुए हैं। इनके दर्शन को प्रकृतिवादी दर्शन भी कहा गया है। प्रकृतिवादी दर्शन से तात्पर्य है कि यहाँ के समस्त कार्यकलाप प्रकृति के नियमों द्वारा संचालित होता है। प्रकृति के तमाम नियमों को यह समुदाय अपनी आदिम ज्ञान परंपरा द्वारा संरक्षित रखे हुए है। इससे जुड़ी कई लोककथाएं इस समुदाय में उपलब्ध हैं, जिसके माध्यम से उनके जीवन-दर्शन को समझने का प्रयास किया जा सकता है। ये कथाएँ पूर्वजों से प्राप्त धरोहर हैं जो आने वाली पीढ़ी द्वारा अर्जित और बाद की पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती हैं।

तानी समुदाय भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में निवास करने वाले पाँच आदिवासी समूहों को कहा जाता है। इन समूहों के नाम हैं- आदी, आपातानी, गालो, न्यीशी और तागिन। यह प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों में निवास करते हैं। इस समूह को तानी आदिवासी समूह कहने के पीछे का मुख्य कारण यह माना जाता है कि ये सभी स्वयं को 'आबोतानी' के वंशज मानते है। 'आबोतानी' को धरती पर जन्म देने वाले प्रथम पुरुष के रूप में जाना जाता है। आबोतानी ने ही मनुष्य समाज का विस्तार किया, जिसके लिए उन्होंने कई मुश्किलों का भी सामना किया। उनकी जीवन यात्रा से संबंधित कई लोक कथाएं इस समुदाय में मिलती हैं इसके इतर भी कई प्रकार की लोक कथाएं यहाँ मिलती हैं जिनमें यहाँ के जनजीवन की आजीविका का प्रमुख आधार माने जाने वाले कृषि और उससे संबंधित लोककथाएं भी शामिल हैं। कथाएं सुनने और सुनाने की परंपरा लोक-जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। अरुणाचल प्रदेश के तानी आदिवासी समुदाय भी इस परंपरा से अछूता नहीं है। इस समुदाय में मौजूद लोककथाओं में आदिवासी जीवन-दर्शन के सूत्र अंतर्निहित हैं। लोक-जीवन के कई ज्ञात-अज्ञात प्रश्न उनके जीवन-दर्शन में शामिल हैं। यहाँ के लोक-जीवन में कृषि का ख़ास महत्त्व देखने को मिलता है। ऐसा माना जाता है कि पूर्व में इस समुदाय के लोग कृषि-कला से अनभिज्ञ थे। यह कला उन्हें परंपरागत रूप से प्राप्त नहीं हुई थी। तानी समुदाय के पूर्वज को यह किसी और माध्यम से प्राप्त हुई थी। इससे संबंधित अनेकों लोककथाएं तानी समूह के पाँचों समुदायों में मिलती हैं। उनमें से एक प्रचलित लोककथा न्यीशी समुदाय में मिलती है जो 'धान की उत्पत्ति' से संबंधित है। न्यीशी समाज में प्रचलित इस लोककथा में कई विविधताएँ देखने को मिलती है। इस समुदाय के लोग अरुणाचल प्रदेश के सात जिलों में फैले हुए हैं। इन जिलों के नाम हैं- पापुमपारे, ईस्ट कमेंङ, कुरुंङ कुमे, करा दादी, पाक्के केस्साङ, लोअर सुबनसिरी, कमलअ और अपर सुबनसिरी। इन जिलों में एक कथा के कई रूपांतर मिल जाते हैं। यहाँ तक कि एक गांव के लोग कुछ अलग ढंग से इसका विवरण देते हैं तो दूसरे गांव के लोग इसे दूसरी तरह से वर्णित करते हैं।

न्यीशी समाज में प्रचलित 'धान की उत्पत्ति' की लोककथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है- आदिम युग में मानव समाज खेतीबारी की कला से परिचित नहीं हुए थे। तब वे अपनी भूख मिटाने के लिए हिन्च (जंगली बेर), ईङीन (कंदमूल), कुल्लू (जंगली केला) आदि पर ही निर्भर रहते थे। एक दिन आबोतानी (न्यीशी समाज के आदि-पूर्वज) और उनका प्रिय पशु किपुंङ (किपुंङ नामक कुत्ता) जंगलों में भूखे प्यासे भटक रहे थे। चलते-चलते वे एक 'तुकुक' (अंजीर का फल) के पेड़ के नीचे पहुँच जाते हैं। उन्होंने सोचा कि अब वे पेट भर तुकुक खायेंगे। लेकिन वहां उन्होंने देखा कि सारा फल 'सुदुम'(हिरन) ने चट कर लिया है। यह देख आबोतानी को गुस्सा आ जाता है और वह किपुंङ को आदेश देता है कि सुदुम को पकड़कर उनके पास लाये। इस तरह किपुंङ सुदुम का पीछा करने लग जाता है। पीछा करते-करते वह 'रिन्त पअर्थ-आन' (अन्न की देवी) के पास पहुँच जाता है। रिन्त पअर्थ-आन द्वारा पूछने पर किपुंङ आबोतानी और मनुष्य समाज की दयनीय अवस्था के बारे में सब कुछ स्पष्ट रूप से बता देता है। यह सब सुनने के बाद रिन्त पअर्थ-आन को आबोतानी और मनुष्य समाज पर दया आती है और वह किपुंङ के कान में अन्न के कुछ बीज डाल देती है। इस प्रकार तानी समाज को अन्न की प्राप्ति होती है। अन्न के बीज देने के उपरांत रिन्थ पअर्थ-आन उन्हें धान के बीज बोने की विधि भी बताती हैं। इस प्रकार कृषि-कला से इस समाज का परिचय होता है। न्यीशी समाज कुत्ते के इस उपकार के प्रति आज भी अपनी कृतज्ञता जताता है। इस समाज में साल के पहले धान की कटाई के दौरान एक विशेष प्रकार का सामूहिक भोज तैयार किया जाता है जिसे न्यीशी में 'आमजी दोलाम' कहा जाता है। 'आमजी' यानी पहला चावल या नया चावल 'दोलाम' का अर्थ होता है- खाना या खाने की क्रिया। इसके लिए नए धान के फसलों की कटाई की जाती है जो अभी पूरी तरह से पके नहीं होते हैं। पूरी तरह पके हुए धान के चावल से भिन्न यह थोड़ा नरम और मुलायम होता है। महिलाएँ प्रातःकाल सूरज निकलने से पहले खेत जाकर धान की कटाई करती हैं। कटे हुए धान को घर पर लाया जाता है। फिर उसे साबूत भूसी के साथ एक बड़े से बर्तन में सादा पानी डालकर कुछ समय तक उबाला जाता है। उबले हुए धान को अंगीठी के राइक्की/रापकी (अंगीठी के ऊपर बने छत जो चारो कोने पर लगी लंबी रस्सी के सहारे झुला हुआ होता है) में सुखाया जाता है। सूखने के बाद धान को चअप्पर (ओखली) में कूटा जाता है। कूटे हुए धान से भूसा और चावल को अलग किया जाता है। अंत में अलग हुए चावल को धीमी आंच में पकाकर एक भोज तैयार किया जाता है। भोज तैयार होने के पश्चात आस-पड़ोस के लोग और रिश्तेदारों को निमंत्रण देते हैं। मेजबान की क्षमतानुसार ज्यादा या कम मेहमानों को आमंत्रित करते हैं। कई-कई बार पूरे गांव को न्योता दिया जाता है। ऐसे में यह एक त्यौहार जैसा प्रतीत होता है। आमजी को कुम्पू ओक (कुम्पू नामक जंगली पत्ता) में परोसकर खाने का रिवाज है। तैयार हुए भोजन में से सबसे पहला निवाला कुत्ते को दिया जाता है। यह परंपरा से चला आ रहा रिवाज है। उपर्युक्त लोककथा के आधार पर लोग आज भी यह मानकर चलते हैं कि कुत्ते के माध्यम से धान की प्राप्ति हुई है। इस कारण खेत के धान से प्राप्त चावल पर पहला हक कुत्ते का माना जाता है। कुत्ते को चावल खिलाकर लोग एक प्रकार से उन पर कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

न्यीशी समाज की उपर्युक्त लोककथा में मनुष्य और जानवर के मध्य अटूट संबंध दृष्टिगोचर होता है। एक जानवर मनुष्य जीवन में कितना महत्त्व रखता है, इसे यह लोककथा दर्शाने में सफल सिद्ध होती है। न्यीशी समाज के लोग आज कृषि-कार्य के माध्यम से अपने और अपने परिजनों का भरण-पोषण करने में सक्षम हैं तो

इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुत्ते का योगदान दिखाई देता है। आदिवासी समाज में इस प्रकार की लोक कथाओं की भरमार है। प्रत्येक जीव-जंतुओं का मानव जीवन में महत्त्व है, को यह कथाएं व्याख्यायित करती हैं। सृष्टि के प्रत्येक जीव का अस्तित्व उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि एक मनुष्य का। आदिवासी समाज और उसके जीवन-दर्शन का यह बुनियादी ढांचा है जिसे तानी समुदाय की यह लोककथा विश्लेषित करती है। आदिवासी समाज में सहभागिता और समानता का जो जीवन-दर्शन है वह प्रस्तुत लोककथा में द्रष्टव्य है। कुत्ते द्वारा श्रमपूर्वक मनुष्य समाज तक धान का बीज पहुँचाया जाना महत्त्वपूर्ण है, जिसके लिए वे आज भी इनका आभार प्रकट करते हैं। आदिवासी जीवन-दर्शन श्रम की बराबरी के सिद्धांत को मानता है। खेत से प्राप्त धान के फसल से बने भोजन का पहला निवाला कुत्ते को खिलाकर उसे उसका प्रतिसाद प्रदान करते हैं। यह परंपरा चिरकाल से चली आ रही है जिसे आज भी न्यीशी समाज और उसके लोक-जीवन में देखा जा सकता है।

तानी समुदाय में उपर्युक्त लोककथा के कई रूपांतर देखने को मिलते हैं। एक ही लोककथा का इन पाँचों समाज में पृथक रूप में वर्णन मिलना आम है। मूल कथा वही होती है पर प्रसंग में भिन्नता मिलती है और पात्रों के नाम अलग होतें हैं। उदाहरण के लिए आदी समाज में भी प्रस्तुत लोककथा पायी जाती है। इस समाज के अनुसार उन्हें धान का बीज 'दोनी कीने यातुङ' नामक कुतिया के माध्यम से 'मिती-मिताङ' यानी समतल इलाके के लोगों से प्राप्त हुआ था। इस लोककथा का एक अंश प्रस्तुत है- "भागती हुई दोनी कीने यातुङ मिती-मिताङ लोगों द्वारा बांस की चटाई पर सूखने के लिए फैलाये गए धान के ऊपर से निकल जाती है। इससे धान के दाने बिखर जाते हैं। परंतु मिती-मिताङ के लोग इतने विनम्र थे कि उन्होंने उस कुतिया को दण्डित नहीं किया, बल्कि उसे थका-हारा देखकर उसकी सहायता करते हैं। कुतिया बातचीत के दौरान उनको पूरी कहानी सुनाती है। पूरी कहानी सुनने के बाद उन लोगों को 'दोनी डोङगर' के प्रति दया आयी। वे दोनी डोङगर लोगों में अन्न की कमी की पूर्ति करने का निश्चय करते हैं। इसीलिए 'निकङ बोदोङ' कुतिया के कानों के छेद में धान के कुछ दाने भर देते हैं।"[1]

इस प्रकार तानी समुदाय के पाँचो समाज में प्रस्तुत लोककथा के कई रूपांतर देखने को मिलते हैं। परंतु इनमें कुत्ते द्वारा धान का बीज लाने के प्रसंग में एकरूपता दिखाई देती है। कुत्ते के इस महान कार्य के लिए अन्य तानी समुदाय की तरह ही आदी समाज के लोग भी इन्हें सम्मान देते हैं। इस संबंध में डॉ. ओकेन लेगो लिखते हैं- "यह भी एक कारण है कि आदी समाज में आज भी कुत्ते का बहुत सम्मान किया जाता है। आदी समाज में कुत्ते की अकारण हत्या न के बराबर है। आज भी बुजुर्ग लोग कुत्ते के कान में बने छोटे से गड्ढे को देखकर इस कथा की चर्चा करते हैं।"[2] अतएव, उपर्युक्त लोककथा गालो समाज में भी उपलब्ध है।[3] गालो समाज के लोग यह मानते हैं कि उन्हें धान के बीज की प्राप्ति 'मोपिन आने' से हुई थी। मोपिन आने ने ही इस समाज के पूर्वज 'आबोतानी' को कृषि-कला का ज्ञान प्रदत्त किया था। इस समाज में प्रचलित लोककथा के अनुसार आबोतानी यानी पिता तानी मोपिन आने के 'आम्पिर-दोलू' लोक में अपनी किन्हीं गलती की सजा काट रहे होते हैं। अपनी सजा पूरा करने बाद जब वह तानी-लोक में जाने लगते हैं। जाने से पहले वह मोपिन आने से 'यिली-आम्ली' यानी धान के बीज की मांग करते हैं। पहले तो वे अनिच्छुक दिखती है पर आबोतानी के अत्यधिक बल देने पर वह मान जाती है और उसे धान का बीज सौंप देती है। बीज लेकर आबोतानी अपने लोक वापस जाने लगते हैं पर रास्ते में एक नदी पार करते वक़्त सारा का सारा बीज नदी की धार में बह जाता है। फिर आबोतानी मोपिन

आने के पास जाता है और उनसे धान का बीज देने की विनती करता है। आबोतानी की याचना सुनकर मोपिन आने फिर से धान के कुछ बीज आबोतानी के फालतू कुत्ते के कान के छोटे से छिद्र में डाल देती है। बीज लेकर वह तानी लोक पहुँच जाता है और उसे किसी बंजर जमीन पर बो देता है जिसके कारण बीज अंकुरित नहीं हो पाता। निराश होकर आबोतानी पुनः मोपिन आने के द्वार पर विनती लेकर पहुँच जाता है। आबोतानी का अनुरोध सुनकर मोपिन आने उसे कृषि-कला का ज्ञान देती है और उसे बीज उगाने की संपूर्ण विधि भी बता देती है। मोपिन आने द्वारा बताई गई विधि अनुसार आबोतानी उपजाऊ जमीन तैयार करने के लिए जंगल के पेड़ काटने लगते हैं, तभी वहां जंगल के निरक्षक यापुम आ जाते हैं और आबोतानी के काम में बाधा उत्पन्न करते हैं। खूब परिश्रम के बाद यह परेशानी भी अंततः मोपिन आने की मध्यस्थता से सुलझ जाती है। अंत में तैयार की गई ज़मीन पर धान का बीज बो दिया जाता है। इस तरह धान का खेत तैयार होता है और जिसमें शीघ्र ही लहलहाती फसल आ जाती है।

गालो समाज में मोपिन आने के इस अमूल्य उपकार को आज भी याद करते हैं और प्रतिवर्ष उनको कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनके नाम पर मोपिन त्योहार मनाते हैं। उनका मानना है कि अगर मोपिन आने ने आबोतानी पर यह कृपा नहीं बरसाई होती तो आज समस्त तानी समुदाय को भुखमरी का शिकार होना पड़ता। अतः उनका यह उपकार वह आज भी मानते हैं और उन्हें आभार व्यक्त करते हुए मोपिन त्योहार के दिन खेत से उपजे कई प्रकार की फसल उनको अर्पित करते हैं।

सृष्टि का नियम है संतुलन, और आदिवासी समुदाय इस संतुलन को कायम रखने का पक्षधर रहा है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तुओं और जीवों के बीच संतुलन निर्धारित करना आदिवासी जीवन-दर्शन का मूल सिद्धांत रहा है जिसका अनुपालन वे आज भी पूरी निष्ठा से कर रहे हैं। गालो समाज की उपर्युक्त लोककथा में आदिवासी जीवन-दर्शन का यह पहलू स्पष्टतः उजागर हुआ है। यह मान्यता है कि आबोतानी द्वारा जंगल का अतिक्रमण करने पर जंगल का रखवाला यापुम उनसे नाराज़ होते हैं। तानी समुदाय की यह मान्यता आबोतानी और 'ऊई' (विभिन्न प्रकार की आत्माएं जिसमें से यापुम भी एक है) दोनों के बीच संतुलन बनाने के लिए सृष्टि के निर्माताओं ने एक अदृश्य सीमा रेखा निर्धारित की थी। इस सीमा रेखा का अतिक्रमण करना दोनों ओर वर्जित मानी जाता है। किसी पक्ष द्वारा इसका अतिक्रमण करने पर, कई तरह की विपदा उत्पन्न हो सकती है क्योंकि यह सृष्टि के बनाये गए संतुलन के नियमों के विरुद्ध जाना और उसका उलंघन करना है।

तानी समुदाय के तागिन आदिवासी समाज में तानी और मअजी यापम (जंगल की आत्मा या रखवाला) की लोककथा प्रचलित है जिसमें प्रकृति के संतुलन, मनुष्य और आत्मा लोक में सहअस्तित्व आदि को दर्शाया गया है। इस लोककथा के अनुसार सृष्टि की शुरुआत में आबोतानी और यापोम/यापम एक साथ रहा करते थे। एक साथ रहते हुए भी दोनों मूलतः भिन्न लोक से संबंध रखते थे। आबोतानी का संबंध मनुष्य समाज से था तो वहीं यापम का संबंध घने जंगलों में रहने वाले जंगली जानवर और पेड़ों-पोधों आदि से थे। इस लोककथा के अनुसार आबोतानी और यापम के बीच विवाह का संबंध स्थापित हो जाता है और यापम आबोतानी के साथ रहने लगते हैं। यापम के साथ रहते हुए भी आबोतानी उसकी मूल पहचान से अनभिज्ञ थे। आबोतानी के रहते हुए भी यापम अपने सगे-संबंधी के प्रति आसक्त थीं। एक दिन आबोतानी धान आदि उगाने के लिए खेत तैयार करने लगते हैं जिसमें वह घने जंगल के पेड़ आदि को काट कर गिराते है। अपने प्रिय जनों की यह दशा देख

यापम के मन में तीव्र वेदना उत्पन्न होने लगती है। वे अपने दिव्य शक्ति से उन्हें पुनः जीवित करते हैं। यह देख आबोतानी को क्रोध आता है और दोनों में संघर्ष होने लगता है। यह संघर्ष अतिशय रूप से बढ़ने लगता है जिसे रोकने के लिए स्वयं दोरी चिजी (तागिन समाज के अनुसार यह कई समस्याओं के निवारक हैं, इनका विवरण कई बार सृष्टिकर्ता के रूप में भी किया जाता है) को आना पड़ता है। दोरी चिजी दोनों को अलग-अलग रहने का फरमान सुनाते हैं और उनकी संपत्ति का विभाजन भी कर दिया जाता है-"दोरी चिजी ने फरमान सुनाया कि जंगलों का ऊबड़-खाबड़ और वीरान इलाका जो अतिशय घना हो, असामान्य बाँस, असामान्य बेंत, असामान्य पेड़ तथा असामान्य रस्सियाँ सब मअजी-यापम के हिस्से में जाएंगी और वह सारा इलाका आबोतानी के नाम होंगे जहाँ इंसान अपना आशियाना (घर) बसा सकें। आबो तानी के हिस्से में सारे पेड़-पौधे होंगे जो दिखने में बिल्कुल सामान्य होंगे, जिसे उपयोग में भी लाए जा सके।"[4]

आज भी यहाँ के लोगों का यह विश्वास है कि यापुम घने जंगलों में वास करते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। मनुष्यों को घने जंगलों में विचरण करना, बड़े-बड़े असामान्य पेड़ों को काटना, जंगली जानवरों का अतिरिक्त शिकार करना आदि वर्जित माना जाता है। प्रकृति के इस नियम का पालन न करने वाले व्यक्ति पर कई प्रकार की विपदा आ जाती है। घने जंगल यापम की संपत्ति मानी जाती है, इसीलिए बड़े-बड़े पेड़ो को काटने से पहले यहाँ के लोक-जीवन में कई प्रकार के अनुष्ठान किये जाते हैं। अकारण ही यहाँ के लोग पेड़ों को नहीं काटते और प्रकृति का दोहन नहीं करते हैं। प्रकृति और मनुष्य के मध्य यह संतुलन आदिवासी जीवन-दर्शन के सबसे अनुपम पहलुओं में से एक है।

इस प्रकार तानी समुदाय में कृषि संबंधी ढेरों लोककथाएं हैं जिनमें आदिवासी जीवन-दर्शन के कई सूत्र प्राप्त होते हैं। आदिवासी जीवन-दर्शन हमेशा से सवालों के कटघरे में बना रहा है क्योंकि इनकी वाचिकता में आदिवासी जीवन-दर्शन के अनगिनत रहस्य छुपे हुए हैं जिनको बिना स्थूल-सूक्ष्म दृष्टि के जान पाना कठिन है। आदिवासी जीवन-दर्शन कई तरह के पूर्वाग्रहों के शिकार भी हुए हैं। अतः इनके जीवन-दर्शन के स्वरूप और सिद्धांतों से कई समाज आज भी अपरिचित है। साहित्य में आदिवासी जीवन-दर्शन की चर्चा कुछ दशक पहले ही प्रारंभ हुई है, पर इनके लोक-साहित्य में यह चिरकाल से व्याप्त रही है। अर्थात् इनके लोक-साहित्य का गहन अध्ययन करने पर इनके जीवन-दर्शन से संबंधित कई प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लेगो, ओकेन. (2019). *आदी जनजाति:समाज और लोक साहित्य*. नई दिल्ली: यश पब्लिकेशंस. पृ. सं. 63
2. वही, पृ. सं. 64
3. रीबा, तुम्बोम एवं शर्मा, हरीश कुमार. *अरुण प्रभा पत्रिका*. अरुणाचल प्रदेश. पृ. सं. 97-98.
4. शर्मा, बीना शर्मा एवं पाण्डेय, नंद किशोर. (2022). *तागिन लोक साहित्य*. आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान. पृ. सं. 5.

*(**लेखकीय परिचय :** यागे काबाक राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं।*
मोबा: 8415821609, ई-मेल : myagekabak@gmail.com)